अध्याय – पंचम

शोध, सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय – पंचम

शोध, सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.01 प्रस्तावना

5.02 समस्या कथन

5.03 उददेश्य

5.04 शोध से संबंधित परिकल्पनाएं

5.05 शोध की सीमाएं

5.06 न्यादर्श चयन प्रक्रिया

5.07 प्रयुक्त उपकरण

5.08 प्रयुक्त सांख्यिकी

5.09 निष्कर्ष

5.10 निष्कर्ष के आधार पर विश्लेषण

5.11 सुझाव

5.12 भावी अध्ययन हेतु सुझाव

5.01 प्रस्तावना

पिछले 58 वर्षो में भारत में शैक्षिक संस्थाओं की संख्या में तीव्रतर बढ़ोत्तरी हुई है । लेकिन शिक्षा का स्तर आज भी निम्नतर है। भारतीय संविधान के अनुछेद 45 में 6 से 14 वर्ष की आयु वर्ग के सभी बालक एवं बालिकाओं को 10 वर्ष तक अनिवार्य एवं निशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया था, लेकिन 58 वर्ष की लम्बी अवधि बीत जाने के बाद भी आज तक प्रारंभिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण का लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाये है। 1986 की शिक्षा नीति में इस स्थिति की समीक्षा की गई और प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लिए तिथि 2020 निर्धारित की गई है।

आज शिक्षा का परिदृश्य अपेक्षाकृत निराशाजनक है, गुणवत्ता को लेकर भी स्थिति उत्साहजनक नहीं है। शिक्षा के सार्वजनीकरण एवं गुणात्मक सुधार विभिन्न पहलुओं में पाठ्य पुस्तकों के परपंरागत दृष्टिकोण की प्रकृति में भी परिवर्तन आवश्यक है, जिसमें विद्यार्थी विभिन्न परिभाषाओं, अवधारणाओं, सिद्धांत प्रयोगो, विश्लेषण, अवलोकन एवं निष्कर्ष को आसानी से ग्रहण कर सके ।

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता ने पाठ्यपुस्तको की गुणवत्ता में सुधार हेतु मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित कक्षा - 7 की विज्ञान विषय की अति कठिन अवधारणाओं का विश्लेषण किया गया ।

5.02 समस्या कथन

कक्षा - 7 में विज्ञान विंषय की अतिकठिन अवधारणाओं का अध्ययन ।

5.03 उददेश्य

1. कक्षा - 7 की विज्ञान की ग्रामीण विधार्थियों एवं शंहरी विघार्थियों की अति कठिन अवधारणा का अध्ययन ।

2. कक्षा - 7 की विज्ञान विषय की बालक बालिकाओं की अतिकठिन अवधारणाओं का अध्ययन ।

3. कक्षा 7 की विज्ञान विषय में शंहरी बालको एवं ग्रामीण बालको की अतिकठिन अवधारणाओं का अध्ययन ।

4. कक्षा - 7 की विज्ञान विषय में शहरी बालिकाओं एवं गय्रमीण बालिकाओं की अतिकठिन अवधारणा का अध्ययन ।

5.04 शोध से संबंधित परिकल्पनाएं

- कक्षा - 7 में विज्ञान विषय की अतिकठिन अवधारणाओं के संगत ग्रामीण एवं शहरी विघार्थियों में सार्थक अंतर है।
- कक्षा - 7 में विज्ञान विषय की अतिकठिन अवधारणाओं के संगत बालक बालिकाओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- कक्षा - 7 में विज्ञान विषय की अतिकठिन अवधारणाओं के संगत शहरी बालको एवं ग्रामीण बालको में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- कक्षा - 7 में विज्ञान विषय की अतिकठिन अवधारणाओं के संगत शहरी बालिकाओं एवं ग्रामीण बालिकाओं में सार्थ अंतर है।

5.05 शोध की सीमाएं

1. प्रस्तुत लघु प्रबंध में म. प्र. के रायसेन जिले के ग्रामीण व शहरी विघालयों को ही शामिल किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा - 7 के बालक बालिकाओं को ही शामिल किया गया है।
3. प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में कक्षा - 7 की विज्ञान विषय को केवल तीन इकाईयों को शामिल किया गया है।

5.06 न्यादर्श चयन प्रक्रिया

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श का चयन सुविधानुसार सौद्देश्य विधि से कियागया है। इसके अन्तर्गत रायसेन जिले और उसके विकासखण्डो के ग्रामीण और शहरी विघालयों के कक्षा - 7 के बालक बालिकाओं का चयन किया गया ।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में कुल 96 विद्यार्थियों का चयन किया गया । जिसमें -

ग्रामीण विघार्थी	–	56	=	96
शहरी विघार्थी	–	40		
कुल बालक	–	44	=	96
कुल बालिकाएं	–	52		

5.07 प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में शोधकर्ता ने उपकरण के रूप में अवधारणात्मक समझ परीक्षण प्रश्नावली का प्रयोग किया गया । जिसके अन्तर्गत 4 प्रकार के प्रश्नों का समावेश किया गया ।

1. रिक्त स्थान भरो ।
2. जोड़ी बनाओ
3. बहु विकल्पीय
4. अति लघुउत्तरीय

परीक्षण प्रश्नावली का निर्माण विषय विशेषज्ञों तथा शोधकर्ता के स्वयं के अनुभव के आधार पर किया गया ।

5.08 प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में अति कठिन अवधारणओं के संगत विद्यार्थियों के बीच सार्थकता अंतर ज्ञात किया गया है। इसके लिए t परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

5.09 निष्कर्ष

1. प्रस्तुत लघुशोध में अतिकठिन अवधारणाओं के संगत ग्रामीण एवं शहरी विघार्थियों के समूहों में सार्थक अंतर है।
2. अति कठिन अवधारणाओं के संगत बालक बालिकाओं के समूहों में सार्थक अंतर है।
3. अति कठिन अवधारणाओं के संगत शहरी बालको एवं ग्रामीण बालको के समूहों में सार्थक अंतर है।
4. अति कठिन अवधारणाओं के संगत शहरी बालिकाओं एवं ग्रामीण बालिकाओं के समूहों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5.10 निष्कर्ष के आधार पर विश्लेषण

शहरी विघालयों में अध्यापन कार्य संबंधी सुविधाएं ग्रामीण विघालयों की अपेक्षसा अत्याधिक है।

ग्रामीण विद्यालयों में अभिभावको का योगदान जनभागीदारी नगण्य है तथा शहरी विद्यालयों में पूर्ण जन सहयोग, सहभागिता सक्रिय रूप से देखी जा सकती है जिसका सीधा प्रभाव बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश निम्न आय वर्ग के निर्धन गरीब बालक अध्ययन करते है।

शहर में बहुत सारे डायवर्सन या डिस्ट्रेक्शन होते हैं, ग्रामीणों की अपेक्षा। शहरी विद्यालयों में सुविधा होने के उपरान्त भी विद्यार्थी उस उपलब्धि स्तर को प्राप्त नहीं कर पाते हैं। इन डायवर्सन एवं डिस्ट्रेक्शन होने के कारण शहरी विद्यार्थियों का पढ़ाई के प्रति लगाव एवं ध्यान शायद कम हो

जाता है। उनका ध्यान दूसरे आर्कषणों पर बढ़ता है, जिसके कारण उनकी उपलब्धि का स्तर कम हो जाता है।

बालकों को बालिकाओं की **अपेक्षा अधिक पूर्ण जन सहयोग, स्नेह** तथा अच्छा वातावरण प्राप्त है। जिसका सीधा प्रभाव बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

शहरी बालिकाओं की तरह ही ग्रामीण बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि अच्छी है जो यह संकेत करती है कि ग्रामीण बालिकायें सामाजिक तथा पारिवारिक उत्तरादायित्वों के चलते भी परिश्रम से अच्छा प्रदर्शन कर सकती हैं।

शिक्षा जगत में होने वाले परिवर्तन, नवाचार तथा नई पद्धतियों पहुँच ग्रामीण विद्यालयों तक कुछ सीमा तक पहुँच जाती है। इन पद्धतियों के दौरान जैसे रायसेन जिले में ऑपरेशन ब्लेक-बोर्ड, मध्यान्ह भोजन आदि का प्रभाव उनके उपलब्धि स्तर पर पड़ता है। रायसेन जिले में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान स्कूली शिक्षकों के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर उनके विज्ञान के ज्ञान में विस्तार करता है, जिसका प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। इस शोध कार्य में जो ग्रामीण विद्यालय दीवानगंज व अम्बाड़ी दोनों ही डाइट के अन्तर्गत आते हैं। डाइट के विभिन्न कार्यक्रमों का प्रभाव इन विद्यारलयों पर स्पष्ट रुव्प से दिखाई पड़ता है।

5.11 सुझाव

1. विद्यार्थियों को कम से कम प्रारंभिक स्तर तक निर्धारित स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार अपने क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा देनी चाहिए ।
2. शिक्षकों को विज्ञान कौशलों के अंतर्गत प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।
3. यह ज्ञात होना आवश्यक है कि अति कठिन अवधारणाएं भाषागत समस्या को लेकर है या प्रत्यय निर्माण के कारण तथा कारणों का पता करके निदानात्मक शिक्षण दिया जाना चाहिए ।
4. विद्यालयों में शैक्षिक वातावरण उपलब्ध होना चाहिए ।

5. शिक्षक शिक्षिकाओं को शिक्षा जगत में होने वाले आधुनिक परिवर्तनों, शोध अनुसंधानों का ज्ञान कराने के लिए स्कूलों में समाचार पत्र ज्ञानवर्धक पत्रिकाओं को उपलब्ध कराना चाहिए ।
6. शिक्षा को बालकेन्द्रित और कियाकलाप प्रधान बनाना चाहिए ।
7. विद्यार्थियों को विज्ञान अध्ययन संबंधी आधुनिक सुविधाएं नक्शा, चार्ट , मॉडल विज्ञान किट, रेडियों, टी.वी., कम्पयूटर आदि विद्यालयों में उपलब्ध कराए जाने चाहिए।
8. अपेक्षित स्तर प्राप्त करने के उद्‌देश्य से शिक्षकों की मदद के लिए उनको प्रशिक्षित कर शिक्षक मार्गदर्शिका पुस्तक उपलब्ध कराई जानी चाहिए ।

5.12 भावी अध्ययन हेतु सुझाव

1. अति कठिन अवधारणाओं के विश्लेषण के उपरांत निदानात्मक शिक्षण द्वारा कठिनाईयों को दूर करने संबंधी अध्ययन ।
2. अतिकठिन, कठिन अवधारणाओं के संगत शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन ।
3. बालक एवं बालिकाओं में विज्ञान की अवधारणा संप्राप्ति का तुलनात्मक अध्ययन ।
4. विज्ञान विषयों के अलावा अन्य विषयों की अतिकठिन अवधारणाओं का अध्ययन ।
5. कक्षा छटवी व आठवी के विद्यार्थियों में विज्ञान विषय के ग्रहकार्य का अध्ययन।
6. कक्षा आठवी की विज्ञान पाठ्य पुस्तक का वैज्ञानिक मूल्यों के प्रति विश्लेषणात्मक अध्ययन ।